ललित ने सीखा मास्क बनाना, नानी की मदद से

IndSciCovid

by Indian Scientists Response to Covid

https://indscicov.in/

दृष्टांत: लबोनी रॉय

ललित अपने घर के दरवाजे के पास बैठा था। आजकल "बाहर" जाने के नाम पर बस वह इतना ही कर सकता था। जब से लॉकडाउन की घोषणा हुई तब से घर के सभी लोग उसकी सुनीता मौसी के कहे को मानते थे। वह डॉक्टर थीं और उन्होंने बाहर जाने के लिए बिल्कुल मना किया था। इसकी सबसे बड़ी वजह यह थी कि घर में बूढ़ी नानी को वायरस से बचाना ज़रूरी था। सिर्फ ललित के पिता ही बाहर जा सकते थे और वह भी बस ज़रूरी सामान लाने के लिए। और कुछ दिनों बाद जब वे बाहर जाते तो दवाई की दुकान से थोड़े और मेडिकल मास्क खरीद कर ले आते।

ललित का बड़ा भाई दीपू भी घर पर था। जब से कॉलेज हॉस्टल में उसके कमरे में रहने वाले दोस्त को कोविड-19 होने का पता चला था, तब से दीपू घर के ही एक कमरे में सेल्फ क्वारंटाइन में था। उसे अपने कमरे में ही रहना था और पूरे दिन मास्क पहनना था जिसको वह सिर्फ सोते समय ही निकाल सकता था। दीपू जब बाथरूम जाने के लिए कमरे से बाहर निकलता तब उसके चेहरे पर वह मनहूस सा मास्क देख-देखकर ललित को ऊब होती थी। उसने बाहर सड़कों पर तो देखा था कि लोग अलग-अलग रंगों के मास्क पहनते हैं!

“माँ ... ये इतने रंग-बिरंगे मास्क कैसे हैं? क्या हम दीपू भैया को भी उनके कमरे में ऐसा मास्क पहनने को दे सकते हैं? ” ललित घर के अंदर अपनी माँ की ओर देखकर चिल्लाया। "ये शायद सिर्फ घर पर बने कपड़े के मास्क हैं।" उसकी माँ ज्योति ने उसे चुप कराते हुए कहा। फिर वो बोली "अपने भाई के बारे में इतनी जोर से मत चिल्लाओ - लोग सोचेंगे कि उसे कोविड-19 है! अभी वह सिर्फ क्वारंटाइन में है और एहतियात के तौर पर घर में भी मास्क पहने रहता है, जैसा कि सुनीता मौसी ने हमें बताया है।”

ललित ऐसे चुप करा देने पर नाराज हो गया। उसने कपड़े के मास्क के बारे में ऑनलाइन देखना शुरू किया और फिर कई सारे सवाल लेकर अपनी नानी के पास पहुँच गया। “नानी, क्या आप मास्क सिल सकती हैं? क्या हमारे पास सिलाई मशीन है?”

नानी ने जवाब दिया, "अब तो कई सालों से मेरी नज़र कमजोर हो गई है। सिलाई करने लायक तो नहीं ही है।" “क्या हम घर पर मास्क की सिलाई कर सकते हैं? क्या आप मुझे सिलाई करना सिखाओगी?” ललित और कुछ पूछने ही वाला था मगर नानी ने सुनना बंद कर दिया। वह भी हफ्तों से घर के बाहर नहीं गई थीं और पड़ोस की महिलाओं के साथ गपशप न कर पाने से उन्हें बुरा लग रहा था। उन्हें फोन पर बातें करना पसंद नहीं था और अब इस उम्र में ऐसा करने का मन भी नहीं था। बस उन्हें यह फिक्र थी कि उनकी सब सहेलियां ठीक हैं या नहीं।

ललित अपनी माँ को कपड़े के मास्क के बारे में समझाने के लिए वापस चला गया "मैंने जो पढ़ा है उसके अनुसार पिताजी बाहर जाते समय कपडे का मास्क पहन सकते हैं। अगर उन्हें वायरस होगा भी तो कपड़े का मास्क उसे फैलने से रोकने के लिए काफ़ी है। तुम मौसी से पूछ सकती हो! "

ज्योति की बहन, सुनीता एक स्थानीय सरकारी अस्पताल में डॉक्टर थी। आजकल वह बहुत व्यस्त रहती थी, लेकिन हर कुछ दिनों में कम से कम अपनी मां, ललित की नानी, का हालचाल लेने के लिए फोन ज़रूर कर लेती थी। पिछली बार सुनीता ने अस्पताल में सर्जिकल मास्क की कमी का ज़िक्र किया था। ज्योति को इस बात की चिंता हो रही थी। उसने सोचा, "शायद हम सभी इन कपड़ों के मास्क का इस्तेमाल कर सकते हैं। ताकि सुनीता और उसके साथ काम करने वालों के लिए मेडिकल मास्क कम ना पड़े।"

उसी दिन कुछ समय बाद ज्योति ने नानी का सिलाई के सामान का पुराना बक्सा निकाला। उसे देखकर नानी ने भी इस काम में शामिल हो गई। “ये चीज किसलिए इस्तेमाल होती है? यह हुक किसलिए है? सुई में धागा कैसे डालते हैं? ” ललित पूछने लगा। अपनी माँ के विपरीत ज्योति को सिलाई का ज़्यादा शौक नहीं नहीं था और उसने खुशी-खुशी ललित और उसके सवालों को अपनी मां को सौंप दिया। नानी ने पहले ललित को कुछ आसान टांके लगाना सिखाया। इसके बाद ललित को 3 परतों वाले मास्क का एक पैटर्न मिल गया। उसे कैसे सिलना है ये सब उसने नानी की मदद से पढ़ा और समझा। ज्योति को कुछ पुराने सूती तकिये के गिलाफ़ मिल गए जिनके कपड़े को काटकर मास्क के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था। अगले दिन ललित ने मास्क बनाना शुरू कर दिया।

उस रात कपड़े के मास्क का उपयोग करने के बारे में घर पर लंबी चर्चा हुई। ललित और उसकी माँ दोनों कह रहे थे कि कपड़े के मास्क इस्तेमाल करने चाहिए, लेकिन उसके पिता अभी नहीं मान रहे थे। फिर भी ललित ने सिले हुए मास्क डिटर्जेंट से धोकर सूखने के लिए फैला दिए।

कुछ दिनों बाद, ललित ने देखा कि उसके पिता उसका बनाया हुआ कपड़े का मास्क पहनकर बाहर जाने के लिए तैयार हो रहे हैं। "पिताजी! आप इस मास्क में कितने अच्छे लग रहे हो! क्या आपने आईना देखने के बाद अपना मन बदल दिया?" ललित ने पूछा।

"हां, मैं अच्छा दिख रहा हूं! मैंने कपड़े के मास्क के बारे में कुछ सरकारी वेबसाइटों पर देखा और फिर हमने सुनीता मौसी से भी बात की। उसने कहा कि मैं तो कपड़े का मास्क पहन सकता हूं, लेकिन दीपू के लिए अभी यही बेहतर होगा कि वह मेडिकल मास्क का इस्तेमाल चालू रखे । क्योंकि उसके अंदर वायरस हो, इसकी संभावना थोड़ी ज़्यादा है। सुनीता ने आज सुबह तुम्हारी मां को यह भी बताया कि उसके साथ काम करने वाले लोग तुम्हें ये सब शुरू करने के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं: क्योंकि हम जितने कम मेडिकल मास्क इस्तेमाल करेंगे उनके लिए उतने ही ज़्यादा मास्क उपलब्ध होंगे! क्या तुम और नानी मिलकर सिर्फ़ हमारे लिए नहीं बल्कि हमारे दोस्तों के लिए भी मास्क बनाओगे?"

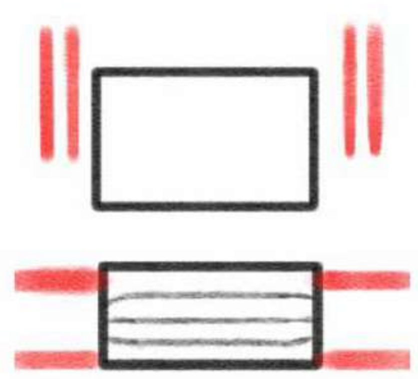

नानी ने अपनी एक सहेली से सिलााई मशीन मांग ली और ललित को उसे चलाना सिखा दिया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, ललित की बाहर जाने की इच्छा कम होने लगी और वह ज़्यादा से ज़्यादा समय कपड़ा काटने और सिलाई करने में बिताने लगा। नानी को भी अपने पुराने हुनर को फिर से ताज़ा करने में मज़ा आ रहा था : भले ही वे अपनी कमजोर नज़रों के कारण सिर्फ कपड़ा काटने में कभी-कभी ललित की मदद कर देती। लेकिन जब भी ललित को मास्क का कोई नया डिज़ाइन मिलता, तो वह उसके बारे में नानी को बताता और फिर उन दोनों की बातें ख़त्म ही नहीं होतीं।

"मुझे तो केवल सादा ब्लाउज सिलना आता है, लेकिन जब यह सब खत्म हो जाएगा, तब मैं तुम्हें अपनी सहेली कल्पना के बेटे से मिलवा सकती हूं। वो एक दर्जी है - वो तुम्हें लगभग हर चीज़ सिलना सिखा सकता है!" नानी ने कहा। "अब तो इंतजार नहीं होता वो सब सीखने के लिए!" ललित अगले मास्क की सिलाई शुरू करने के लिए सुई में धागा पिरोते हुए बोला।

इन कहानियों का अभिप्राय दी गयी जानकारी को प्रस्तुत करने के लिए कुछ उदाहरण प्रदान करना है। इस कारण से यहाँ जानकारी को सरल रूप में ही प्रस्तुत किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी और वैज्ञानिक सटीकता के लिए कृपया वेबसाइट पर उपलब्ध अन्य सहायक लेख अवश्य देखें।